जून २०१७ सहयोग शुल्क : रु. १.०० अंक : ६

दिव्यांग सेतु

संपादक : संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

दिव्यांगों के लिए स्माईल ईयर
दिनांक २६ जनवरी, २०१७ से दिनांक २६ जनवरी २०१८ तक
ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट NGO के माध्यम से
क्रिस्टल डेन्टल केयर (डॉ. शाश्वत जैन एवं चिकित्सक दल)
दिव्यांगों व शहीद सैनिकों के जरुरतमंद परिवारों के लिए
नि:शुल्क जाँच एवं निदान के लिए प्रतिबद्ध है

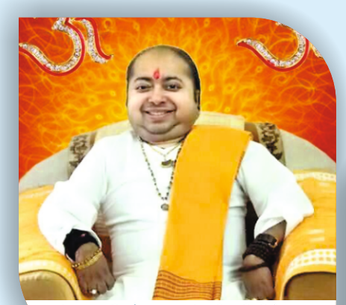

KRYSTAL DENTAL CARE
MULTISPECIALTY DENTAL CLINIC
DIGITAL SMILE DESIGN AND IMPLANT CENTRE
180, Titanium City Centre Mall, Near IOC Petrol Pump,
Anandnagar Road, Satellite, Ahmedabad - 380015
Clinic : 079 - 48008004

Dr. Shashwat Jain
+91 99786 01890
M.D.S. - Prosthodontics (Manipal)
PGCOI - Implant Specialist
DSD - Digital Smile Design
TIMINGS :
10.00 am to 08.00pm

શ્રી પી. સી. જૈન
ચાર્ટર્ડ એકાઉન્ટન્ટની
છત્રછાયામાં ચાલતી...

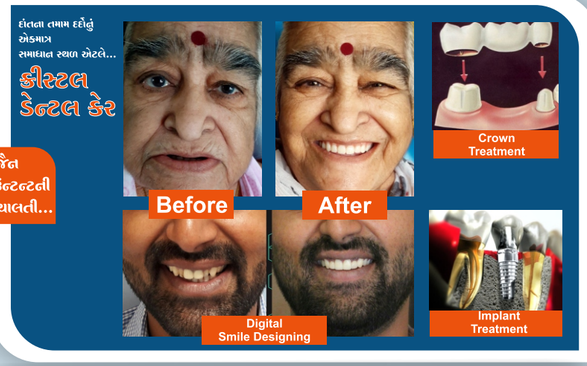

Consultant Prosthodontist & Implantologist
- Maxillofacial Prosthetics
  - Cancer Rehabilitation
  - Trauma Rehabilitation
- Implant Rehabilitations
- Digital Smile Designing
- Full Mouth Rehabilitations
- Crowns & Veneers
- Full & Partial Dentrures

WHAT WE DO:
- Implant treatment
- Digital Smile Design
- Dentistry for aged patients
- Fixed and removable dentures
- Crowns and Veneers
- Prosthetic replacements (Eye, Ear, Nose, Fingers)
- Orthodontics
- Dentistry for Kids
- Root canal treatment
- Gum treatment
- Laser dentistry

OPG Facility available
Pick up & Drop Facility for Senior Citizens

Website : www.krystaldentalcare.com | Email: drs@krystaldentalcare.com

निरामय हेल्थ पॉलिसी की
जानकारी देकर
फॉर्म भरते हुए
कार फाउन्डेशन
ट्रस्ट के कार्यकर

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

* केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल पाल्सी, ऑटीज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टीपल डिसेबिलिटी (Cerebral Palsy, Autism, Mental Retardation, Multiple Disability) से असरग्रस्त दिव्यांगों को मिल सकती है ।
* ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा ।
* रु. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु. ५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगों के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इन्श्योरेन्स मिल सकता है । (निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र
(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)
वर्तमान की पासपोर्ट साइज फोटो
राशन कार्ड की प्रमाणित कॉपी
निवास स्थान का प्रमाण (राशन कार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हों तो)
बैंक पास बुक की फोटो कॉपी (बैंक के IFSC कोड के साथ)

यह प्रीमियम
ॐकार
फाउन्डेशन
ट्रस्ट द्वारा
भरा जाएगा

दिव्यांग सेतु
मासिक पत्रिका

प्रेरणास्रोत और संपादक
संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक
मिहीरभाई शाह
मो. 9724181999

संपर्क-सूत्र
ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट (NGO)
Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad
ई-७२, आयोजन नगर सोसायटी,
श्रेयस क्रोसिंग के पास,
वासणा, अहमदाबाद.

मोबाईल : 9974955365,
9974955125

मुद्रक
प्रिन्टविजन प्रा. लि.
आंबावाडी बजार, अहमदाबाद-६.
फोन : (079) 26405200

जून : 2017
पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष : 01
अंक : 6

सहयोग शुल्क : ₹ 1.00

संपादकीय

"मेरी दिव्यांगता से मेरी क्षमताओं का आकलन मत कीजिए"-यह वाक्य एक दिव्यांग के मन की पीड़ा को पूरी तरह उजागर करता है । क्योंकि दिव्यांग व्यक्ति जब कुछ ठान लेते हैं, तो वो स्वयं को एक साधारण इंसान से भी अधिक क्षमतावान साबित कर देते हैं, मेरा हमेशा से यह मानना रहा है कि जब ईश्वर मनुष्य को कोई दिव्यांगता देता है तो साथ में उतना ही सामर्थ्य भी देता है । बहुत से दिव्यांग ऐसे भी हुए हैं, जिन्होंने अपनी दिव्यांगता को ईश्वर का अन्याय समझने के बदले वरदान समझकर समाज में अपनी क्षमताओं, अपने कर्मों के बल पर अपना एक अलग ही मुकाम बनाया ।

नृत्यांगना सुधा चंद्रन, संगीतकार रविन्द्र जैन, बेड़मिन्टन खिलाडी गिरीश शर्मा, तैराक भरत कुमार आदि कुछ ऐसे भारतीय नाम हैं जिन्होंने अपनी अदम्य इच्छा शक्ति के आगे अपनी दिव्यांगता को भी हरा दिया । अपने प्रयासों, अपनी मेहनत एवं लगन के बल पर इन लोगों ने अपने-अपने क्षेत्रों में परचम लहरा दिया और यह साबित कर दिखाया कि दिव्यांगता कोई अभिशाप नहीं है । और समाज द्वारा उन्हें सहानुभूति अथवा दया नहीं, उनके अस्तित्व को स्वीकारने की जरूरत है ।

दिव्यांग सेतु का यह अंक ऐसे ही अलग-अलग सामर्थ्य रखने वाले दिव्यांग व्यक्तियों को समर्पित है, जिन्होंने दिव्यांग होने के बावजूद भी समाज एवं देश को स्वयं से ऊपर रखा और पूरे विश्व में भारत को गौरवान्वित किया । जब हमने इस पत्रिका में लिखने के लिए ऐसे व्यक्तित्वों को तलाशना शुरू किया तो हम खुद ही हैरत में पड़ गए । स्थानाभाव के कारण एक अंक में तो सबके बारे में लिखना संभव ही नहीं हो पाया । हम आगे के अंकों में भी ऐसे दिव्यांगो के बारे में आपको बताते रहेंगे, जो संपूर्ण समाज के लिए प्रेरणास्वरूप है ।

अंत में मै आप सभी से यही कहना चाहूँगा कि किसी भी दिव्यांग की कमियाँ या उसकी दिव्यांगता देखने के स्थान पर ईश्वर द्वारा प्रदत्त उसकी सजगता को देखना शुरू कीजिए । वो शरीर से दिव्यांग हैं, दया दिखाकर उसकी आत्मा को दिव्यांग ना बनाएँ...

कवि चावड़ा - एक असामान्य उपलब्धि

''मेरी क्षमताओं को मेरी दिव्यांगता से मत नापिए, मैं दिव्यांग हूँ पर शरीर से, आत्मा से नहीं और ना ही मेरा दिव्यांग होना मुझे मेरे लक्ष्य तक पहुँचने से रोक सकता है''। ऐसे ही विचार शायद कवि चावड़ा के मन में भी आते होंगे, जिन्होंने अभी तक राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर कुल २१ स्वर्णपदक अपने नाम किए हैं।

कवि चावड़ा ने इस वर्ष जयपुर में आयोजित हुई नेशनल पेरा एथलेटिक चैम्पियनशिप में तीन स्वर्णपदक जीतकर गुजरात को गौरवान्वित किया। अप्रैल २०१७में आयोजित इस चैम्पियनशिप में कवि ने १० में से ३ खेलों भाला फैंक, (Javeline Throw), डिस्कस थ्रो (Discus Throw) एवं गोला फेंक(Shot Put) में भाग लिया था ओर तीनो में वे प्रथम स्थान पर रहीं।

कवि ने पिछले वर्ष भी पेरालम्पिक कमेटी ऑफ इंडिया द्वारा पंजाब में आयोजित राष्ट्रीय स्तर प्रतियोगिता में इन्हीं तीन खेलों में स्वर्ण पदक हासिल कर गुजरात को गौरव प्रदान किया था। पर दुःख की बात यह है कि अप्रैल से दो महीने पूर्व ही वो दुबई में आयोजित हुई अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग नहीं ले पाई और उसकी वजह दिव्यांगों के लिए गुजरात में अच्छी कोचिंग सुविधाओं का अभाव है। कवि के अनुसार अन्य राज्यों की तुलना में गुजरात में दिव्यांगों के लिए कोचिंग की सुविधा उपलब्ध ही नहीं है।

यह भी अत्यंत दुःख की बात है कि एक दिव्यांग लड़की, जिसने राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर कुल २१ स्वर्णपदक जीते हैं, वित्तीय सहायता के लिए संघर्ष कर रही है। और उसके लिए वो गुजरात सरकार द्वारा खिलाडी या एथलीट के स्वर्णपदक जीतने पर दो लाख रुपये दिए जाने के वादे पर निर्भर है। कवि के अनुभव के आधार पर गुजरात में दिव्यांगो को शायद ही कभी उनकी पुरस्कार राशि प्राप्त हुई है और गुजरात में दिव्यांग कोटे (Disabled Quota) में सरकारी नौकरी पाना भी एक सपने जैसा ही है।

फिर भी उसे उम्मीद है कि राज्य सरकार अपने वादे के अनुसार उसे वो राशि देगी, जिसकी सहायता से वो ब्राजील मे होने वाली अगली अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धा के लिए तैयारी कर सकेगी।

२८ वर्षीय कवि जूनागढ़ से है। उन्हें कॉलेज के द्वितीय वर्ष के पश्चात सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओ के चलते पढ़ाई अधूरी ही छोड़नी पड़ी क्योंकि एक मोतियाबिंद के ऑपरेशन में उनके पिता को अपनी एक आँख गँवानी पड़ी। नौकरी की तलाश में अहमदाबाद आने पर कवि एक NGO 'Think Positive' के संपर्क में आई, जिसने उन्हें एवं अन्य दिव्यांगो को राज्य स्तर पर होते खेल महाकुंभ में और फिर राष्ट्रीय स्तर पर इन खेलो में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। कवि ने सन २०११ के खेल महाकुंभ से इन खेलों में भाग लेना शुरू किया और तब से लेकर आज तक उन्होंने दिव्यांगो की श्रेणी में इन तीनों खेलों में लगातार स्वर्णपदक ही जीते हैं।

कवि को उनकी उपलब्धियों पर अनेकानेक बधाईयाँ

Source - The Times of India

दिव्यांग विद्यार्थियों का म्यूजिक बैण्ड

Noel Helm के द्वारा कही गई बात कि ''मुझे Disabilities'' शब्द के पहले तीन अक्षर बिल्कुल भी पसंद नहीं है। दिव्यांग होने का यह अर्थ नहीं है कि आप सक्षम नहीं, बल्कि यह है कि आप अलग तरह से सक्षम हैं।'' और इस बात को पूरी तरह सार्थक कर दिखाया है डेविड और निलेश, दो दिव्यांग विद्यार्थियों ने जो पिछले डेढ़ वर्ष से अहमदाबाद में एक म्यूजिक बैण्ड चला रहे हैं।

गुजरात विश्व विद्यालय के एमएसडब्ल्यू (MSW) विभाग में पढ़ रहे डेविड जोशी एवं निलेश सोलंकी, दोनों ही दिव्यांग हैं और संगीत के क्षेत्र में रूचि रखते हैं। मुंबई में दिव्यांगों द्वारा चलाए जा रहे बैण्ड 'उडान' से प्रेरणा लेकर उन्होंने भी संगीत के क्षेत्र में अपनी छिपी हुई प्रतिभा को बाहर लाने के लिए स्वयं का एक बैण्ड बनाया। बैण्ड के सदस्यों का मानना है कि दिव्यांग भी प्रतिभावान होते हैं पर उन्हे प्लेटफॉर्म नही मिल पाता। इसलिए इस बैण्ड के द्वारा उन्होने अपनी प्रतिभा को उजागर करने का प्रयास किया है।

इस बैण्ड के द्वारा गुजरात के बाहर भी म्यूजिकल शोज़ किए गए हैं। इतना ही नहीं, बैण्ड के दो गायकों, निलेश और डेविड ने तो यूएस के न्यूजर्सी में हर दो वर्ष में होने वाले कार्यक्रम 'चालो गुजरात' मे भी परफॉर्म (प्रदर्शन) किया है।

डेविड और निलेश का कहना है कि हमने हमारी और हम जैसे ही व्यक्तियों की प्रतिभा को बाहर लाने के लिए यह बैण्ड बनाया है। हमारी इच्छा है कि हम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करें और अन्य दिव्यागों के लिए प्रेरणास्वरूप बनें। हमें किसी की सहानुभूति से नहीं बल्कि अपनी प्रतिभा के बल पर आगे बढ़ना है।

Source - The Times of India

नेहल तिवारी - एक प्रतिभावान छात्रा

Robert M. Hensel के शब्दों "I choose not to place 'DIS' in my ability" को पूरी तरह से चरितार्थ करके दिखाया है नेहल तिवारी ने, जिन्होंने इस वर्ष गोपी बिरला स्कूल, वालकेश्वर से अपनी बारहवीं की परीक्षा ७६.४% से उतीर्ण की । यह गर्व की बात इसलिए है क्योंकि नेहल ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD) से पीड़ित है ।

सीमा तिवारी, नेहल की माँ को उन पर अत्यधिक गर्व हैं । उन्होंने बताया कि नेहल जब तीन वर्ष की थी तब हमें उसके ऑटिस्टिक होने का पता चला पर हमने ना यह बात कभी किसी से छुपायी और ना ही उसे कोई अलग ढंग से परवरिश दी । उसके ऑटिस्टिक होने की वजह से स्कूल में एडमिशन के लिए भी हमें बहुत सी दिक्कते आई पर हमने हिम्मत नहीं हारी । आखिरकार उसे जी.डी. सोमानी स्कूल में एडमिशन मिला, जहाँ नेहल ने १०वीं कक्षा तक पढ़ाई की । इन दोनों ही स्कूलों में पढ़ने वाली वो पहली एवं एकमात्र ऑटिस्टिक विद्यार्थी थीं । अब नेहल आगे सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology) के क्षेत्र में अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहती हैं ।

नेहल की माँ सीमा का मानना है कि ऐसे बच्चों को विशेष शिक्षण देने की जगह मुख्यधारा में ही शामिल करना जरूरी हैं ताकि वो साथ वाले बच्चों के व्यवहार से सीख सकें । सीमा के अनुसार विशेष शिक्षण स्कूल में रखने से बच्चों को दूसरे बच्चों से घुलने-मिलने का, बात करने का मौका नहीं मिलने से वो दूसरे लोगों से ढंग से बात करना नहीं सीख पाते ।

नेहल को सबसे ज्यादा रुचि विज्ञान में है । उसकी माँ ने कहा, नेहल वैज्ञानिक घटनाओ की कल्पना और अनुभव करने में सक्षम है, अतः उसे वह सबसे अधिक दिलस्चप एवं सापेक्ष लगता है ।

हम सबको नेहल पर गर्व है और हम सभी उसके उज्वल भविष्य की कामना करते हैं ■

Source - The Times of India

जानकी गौड़

जूडो चैम्पियन

हमारे समाज में जहाँ दिव्यांग होना निरर्थक, अभिशाप समझा जाता है, वहीं कुछ दिव्यांग ऐसे भी हैं जिनकी मेहनत एवं सफलता के आगे साधारण इंसान भी कुछ नहीं । ऐसी ही एक लड़की है जानकी गौड़ ।

ताशकंद, उज्बेकिस्तान में २१ से २९ मई, २०१७ तक आयोजित आंतर्राष्ट्रीय मूक-बधिर जूडो चैम्पियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए जानकी ने कांस्य पदक हासिल किया । जानकी मध्यप्रदेश की सिहोरा तहसील के एक छोटे से गाँव कुर्रे की है ।

पदक जीतने के बाद जब जानकी ट्रेन द्वारा दिल्ली से जबलपुर पहुँची, तो प्रशासन की ओर से पुष्पगुच्छ भेंट कर फूल-मालाओं से उनका भव्य स्वागत किया गया । सड़क मार्ग से जबलपुर से सिहोरा आते समय पनागर, बूढ़ागर, गोसलपुर में जगह-जगह सामाजिक संगठनों द्वारा जानकी का फूल-मालाओ से भव्य स्वागत हुआ एवं सिहोरा तहसील का नाम रोशन करने पर उन्हें बधाई दी गई ।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने भी ट्वीट करके जानकी को बधाई देते हुए अपनी खुशी जाहिर की । सी.एम. ने कहा कि जूडो एशियन चैम्पियनशिप मे विजयी दिव्यांग बेटी जानकी अन्य बेटियों के लिए प्रेरणा-स्रोत बनेंगी । सी.एम. ने साथ ही यह भी कहा कि जानकी ने साबित कर दिखाया है कि यदि मन में कुछ कर गुजरने का जज़्बा हो तो आप असंभव को भी संभव कर सकते हैं । ■

Source - Social Media

मंत्र के महायोगी - संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

जैसा कि आप जानते हैं कि ''दिव्यांग सेतु'' का यह अंक उन दिव्यांगो को समर्पित है, जिन्होने अपनी क्षमताओं, अपनी अदम्य इच्छा शक्ति के बल पर अपनी दिव्यांगता को भी हरा दिया और समाज में अपनी एक अलग ही मिसाल कायम की । पर यह अंक अधूरा ही रहेगा अगर इसमें ''दिव्यांग सेतु'' के जनक एवं संपादक मंत्र युग परिवर्तक प.पू. संतश्री ॐऋषि की जीवन यात्रा का समावेश नहीं किया जाए । ॐऋषि प्रितेशभाई के लाखों भक्तों ने उनके द्वारा बताए गए मंत्र शास्त्र के मार्ग पर चलकर चमत्कारिक रूप से अपने दुखों से मुक्ति पाई हैं ।

हिन्दू धर्म एवं हिन्दू संस्कृति की नींव मंत्रों पर ही आधारित है । सभी ऋषि-मुनियों ने अपने काल में मंत्र-साधना के मार्ग को सबसे योग्य माना है । यह सर्वविदित है कि मंत्र की दिव्य शक्ति के माध्यम से ही इस ब्रह्मांड की रचना हुई है । त्रेतायुग में हुए एक महान दिव्यांग ऋषि अष्टावक्र, जिनके आठों अंग वक्र थे, ने अपनी मंत्र शक्ति एवं ज्ञान के तेज से विदेह कहलाने वाले राजा जनक को भी उपदेश देकर उन्हें मोक्ष का मार्ग दिखाया जो 'अष्टावक्र-गीता' के नाम से संग्रहीत है । ज्ञान क्षेत्र में क्रांति करने वाले अष्टावक्र मुनि अब तक के युग के एकमात्र दिव्यांग ऋषि थे । उनके पश्चात युगों बाद अब संतश्री ॐऋषि ने वादत मंत्रों की साधना करके उन्हें सिद्ध किया और मानव जाति को आधि, व्याधि एवं उपाधि - इन तीनों तापों से मुक्त करके एक नए दिव्य समाज की स्थापना का संकल्प किया है । संतश्री ॐऋषि ओरा शास्त्र के ज्ञाता हैं । भारत के महान '८७' संतों की ओरा, त्रिदेव की ओरा और तिर्थंकर भगवंतों एवं महा अवतारों के ओरा की शक्तियों के समन्वय से जो शब्द रचना होती है उसके अनुसार ''ॐकार चालीसा'' जैसे दिव्य स्तोत्र का अदभुत सर्जन करके मानव जाति को ज्ञान एवं जीवन जीने की राह पर बहुत बड़ी अनमोल भेंट प्रदान की है ।

मंत्रयुगपरिवर्तक संतश्री ॐऋषि का जन्म कपड़े के व्यापारी पिता श्री अशोक भाई एवं माता श्रीमती प्रतिमा बहन के यहां ८ फरवरी, १९७७ को अहमदाबाद शहर में हुआ । '८' वर्ष की छोटी आयु में ही उन्हें आर्थराइटिस जैसी अत्यंत गंभीर बीमारी उनके जीवन में शुरू हुइ । ग्यारह वर्ष की उम्र तक इस बीमारी ने उनके पूरे शरीर को सम्पूर्ण रूप से झकड़ लिया था । सभी प्रकार के उपचार, एवं सभी प्रकार की दवाइयाँ लेने के बावजूद भी संतश्री ॐऋषि इस असाध्य बीमारी के पंजे से मुक्त नही हो सके । इस अंधेरी और दर्दनाक जीवन की राह पर उनको ज्ञान का सूरज दिखाने वाले थे उनके दादा एवं पिता के गुरु ''आचार्य श्री मित्रानंद सूरिश्वरजी महाराज'' जो अब उनके भी गुरु बन गए थे ।

गुरुजी के दिव्य आशिष और दिए महाज्ञान मार्ग पर संतश्री ॐऋषि निरंतर चलते रहें । संतश्री ॐऋषि मंत्र साधना एवं विविध शास्त्रों का अभ्यास काशी से आने वाले पंडितो के मार्गदर्शन अनुसार करते रहें । साधना के मार्ग पर चलकर ''वादत मंत्रो'' को ॐऋषि ने सिद्ध करके मंत्रशास्त्र की युगों पुरानी लुप्त धरोहर को पुनर्जीवित किया ।

संतश्री ॐऋषि का जीवन आज के आधुनिक युग में भौतिकता के साथ जुड़े लोगों के लिए, आध्यात्मिकता के पथ पर आगे बढ़ने के इच्छुक लोगों अथवा तो जीवन में थक-हार के निराश हो चुके लोगों के लिए एक अप्रतिम उदाहरण है । जीवन का यह गीत, यह संगीत कि ईश्वर सर्वत्र है, ॐकार की दिव्य शक्ति सर्व में विद्यमान है, इस व्याख्या के उत्थान को उन्होंने सन १९९६ में 'ॐकार संप्रदाय' की स्थापना करके सिद्ध किया । मंत्र शास्त्र, ध्यान शास्त्र में अपने द्वारा की गई क्रांति के माध्यम से मंत्रों की एक अद्भुत शक्ति को सर्व साधारण तक पहुँचाया । मंत्र के इस महायोगी का मानना है कि उन्होंने इस समाज को आज तक जो कुछ

भी दिया है वह सिर्फ और सिर्फ ईश्वरीय प्रेरणा, ईश्वरीय आशीर्वाद से ही संभव हो सका है ।

ॐ ऋषि ने मंत्र-मार्ग के द्वारा लोगों के दुःख दूर करने के साथ ही साथ दिव्यांग सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया है । दिव्यांगो को स्वनिर्भर बनाने हेतु उनके द्वारा स्थापित संस्था ''ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट'' द्वारा अनेक कदम उठाए गए हैं, जिनकी जानकारी हम आपको हर अंक में देते ही हैं । अपने इन निःस्वार्थ सेवा कार्यों के लिए गत वर्ष हीं ॐ ऋषि को राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

ॐऋषि प्रितेशभाई का कहना है कि मेरी क्षमता एवं मेरी ताकत से भी परे परमपिता परमात्मा ने मुझे सबके दुःख दूर करने का निमित्त बनाया है और इसके लिए मैं परमात्मा का अत्यंत आभारी हूँ । मुझे भले ही दिव्यांगता मिली है, पर मुझे इसका जरा भी दुःख नहीं है । यदि दिव्यांग बनाकर लोक कल्याण के लिए ऐसे हजारों जन्म भी परमात्मा मुझे देता है तो मुझे कोई शिकायत नहीं है । ईश्वर मुझे शक्ति दे, मुझे सबके दुःख दूर करने का निमित्त बनाए एवं ॐकार की दिव्य चैतन्य रूपी साधना के माध्यम से मैं सार्थक साबित हो साबित हो सकूँ , ऐसी नम्र विनती में ईश्वर से सदैव करता आया हूँ एवं करता रहूँगा ।

प.पू. संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई के चरणों में कोटि कोटि वंदन एवं उनका आशीर्वाद सदैव सब पर बना रहे, इसी कामना के साथ....

ज्योति मोलासरिया धुप्पड

चूड़ी बेचने से IAS बनने तक का प्रेरणादायी सफर - श्री रमेश घोलप

हर जीवन का एक ध्येय है, योजना है और उद्देश्य है । जिसमें उसका स्थान, उम्र, लिंग या दिव्यांगता कोई बाधा नही । इस बात को पूरी तरह से सत्य साबित करती है रमेश घोलप की प्रेरणास्पद जीवन यात्रा...

आईएएस रमेश, जिन्हें सब रामू कहते थे, की यह यात्रा शुरू हुई महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के बारशी तालुका के एक छोटे से गाँव महागाँव से । उनके पिता गोरख घोलप की गाँव में एक साइकिल रिपेयरिंग की दुकान थी जिससे होती आमदनी उनके चार सदस्यों वाले परिवार के लिए पर्याप्त थी पर लगातार शराब पीने की आदत से स्वास्थ्य खराब रहने की बजह से धंधा ज्यादा नही चल पाया । तब उनकी माँ विमल घोलप ने पास के गाँव में चूडियाँ बेचने का काम शुरू किया । रामू का बाँया पैर पोलियो से ग्रस्त होने के बाद भी उन्होंने और उनके भाई ने इस कार्य में माँ की मदद की । चूंकि महागाँव में एक प्राइमरी स्कूल ही था तो आगे की पढ़ाई करने के लिए उन्हे बारशी अपने अंकल के यहाँ जाना पड़ा ।

रामू जानते थे कि सिर्फ पढ़-लिखकर ही वो अपने परिवार की गरीबी दूर कर सकते हैं । तो उन्होंने जी जान लगाकर पढ़ना शुरू कर दिया । उनकी लगन एवं निष्ठा से उनके शिक्षक भी उनसे बहुत खुश थे । सन २००५ में जब वो बारहवीं कक्षा में थे, तब उनकी कॉलेज मॉडल परीक्षा के दौरान उन्हें अपने पिता के देहांत की खबर मिली । उन दिनों बारशी से महागाँव का किराया ७ रू था । और रामू के पास दिव्यांग पास होने से उनका किराया तो मात्र २ रू ही था पर उनके पास २ रू भी नहीं थे । पड़ोसियों द्वारा मदद किए जाने पर ही वो अपने पिता की अंतिम क्रिया में शामिल हो सके ।

अपने शिक्षक की मदद एवं प्रोत्साहन के कारण रामू ने बारहवीं की परीक्षा में ८८.५ % अंक प्राप्त किए । इतने अच्छे प्रतिशत पाकर भी उन्होंने D.Ed (डिप्लोमा इन एज्यूकेशन) करना पसंद किया, क्योंकि एक तो वो सबसे सस्ता कोर्स था और दूसरा वो शिक्षक बनकर परिवार की आर्थिक मदद कर सकते थे । D.Ed के साथ साथ ही उन्होंने ओपन यूनिवर्सिटी से आर्ट्स में ग्रेज्युएशन भी किया और २००९ में शिक्षक की नौकरी कर ली ।

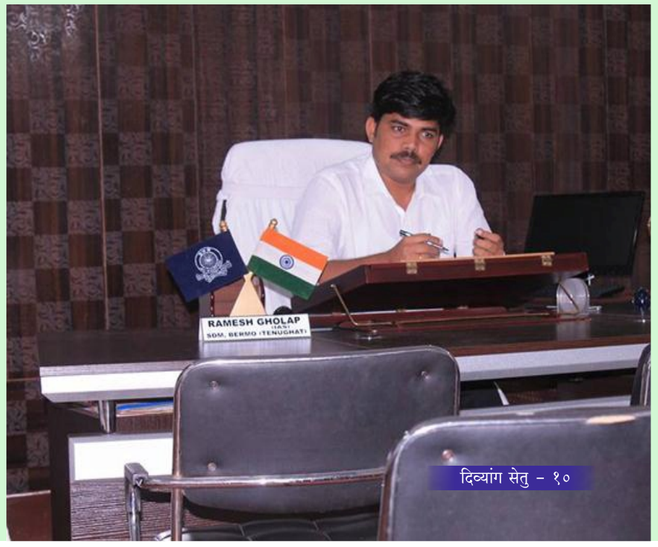

अपनी आंटी को सरकार द्वारा चलाई जा रही इंदिरा आवास योजना में मिले दो कमरों के मकान में से एक कमरे में वो अपनी माँ एवं भाई के साथ रहने लगे । इसी योजना के तहत मकान पाने के लिए उन्होंने अपनी माँ को कई बार सरकारी दफ्तरों के धक्के लगाने पर भी निराश लौटते हुए देखा क्योंकि उनका बीपीएल कार्ड उपयुक्त नहीं था । साथ ही साथ राशन की दुकान पर ब्लैक मे बिकता केरोसिन, सरकारी अस्पतालों में मरीजो की ठीक तरह से देखभाल ना होना (इसका अनुभव उन्हें अपने पिता के टी.बी. के इलाज के दौरान हुआ), उनकी माँ एवं अन्य विधवाओं द्वारा

पेंशन पाने के एवज में ऑफिसर द्वारा रिश्वत लेना इत्यादि वाक्यों से वे बेहद क्षुब्ध थे । अपने कॉलेज के दिनों में संबंधित कार्यों के अनुमोदन के लिए वे बहुत सी बार तहसीलदार के पास जा चुके थे एवं उन्होंने तहसीलदार को अब तक देखे सरकारी अफसरों मे से सबसे शक्तिशाली और प्रभावी पाया था । अपने परिवार को सब समस्याओं से मुक्त कराने के लिए अब उन्होंने भी तहसीलदार बनने की ठान ली ।

सितंबर २००९ में रामू ने अपनी नौकरी से छह महीने का अवकाश लिया और UPSC की तैयारी के लिए पूना चले आए । रमेश कहते हैं कि ''मैं उस वक्त तक MPSC या UPSC का मतलब भी नहीं जानता था और ना ही मेरे पास कोचिंग के लिए पैसे थे । पूना जाकर सबसे पहले मैं इन कोचिंग क्लासेस के एक शिक्षक से सिर्फ यह जानने के लिए मिला कि क्या मैं UPSC परीक्षा दे सकता हूँ ? मुझे पहले शिक्षक, श्री अतुल लांडे, मिले उन्होंने मेरे सवालों का जैसे कि UPSC क्या है ? क्या इसे मराठी मे दिया जा सकता है ? इत्यादि का जवाब देते हुए मुझे कहा कि आपको UPSC देने से कोई नहीं रोक सकता । सिर्फ इसी एक वाक्य की वजह से मैं इसे कर सका।''

मई २०१० में रामू ने UPSC की परीक्षा दी, पर उतीर्ण नहीं हुए । इसी बीच में उन्होंने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर महागाँव में स्थानीय पंचायत चुनाव लड़ने के लिए एक राजनीतिक पार्टी का गठन भी किया जिसमें सरपंच का चुनाव लड़ने के लिए उनकी माँ खड़ी हुई । २३ अक्तूबर, २०१० को पंचायत चुनाव के नतीजे आए जिसमें उनकी माँ कुछ वोटों से हार गई, पर इस हार ने व्यवस्था के खिलाफ लड़ने की उनकी हिम्मत को और बढ़ावा दिया । अपनी आत्मकथा ''इथे थाँवने नाही'' (I Won't Stop here) में रमेश ने इस दिन को अपनी जिन्दगी का सबसे बड़ा टर्निंग पॉइंट (मोड़) बताया है ।

फिर रामू ने नौकरी छोड़कर SIAC (State Institute of Administrative Careers) परीक्षा उतीर्ण की और अंततः बिना किसी कोचिंग के पूरे भारत में २८७ वाँ रैंक पाकर UPSC की परीक्षा भी उत्तीर्ण की । वो सन २०१२ में आईएएस के लिए चुने गए ।

वर्तमान में रमेश घोलप झारखंड में ऊर्जा विभाग में संयुक्त सचिव के पद पर कार्यरत हैं । वो MPSC अथवा UPSC परीक्षा देने के इच्छुक विद्यार्थियों को ३०० से भी अधिक सूचनात्मक एवं प्रेरक व्याख्यान दे चुके हैं और साथ ही साथ गरीबों एवं असहायों की मदद करने के अपने स्वप्न को भी पूरा कर रहे है ।

रामू से रमेश गोरख घोलप, IAS बनने की यह यात्रा समाज के लिए एक बहुत बड़ा उदाहरण है कि यदि कोई लक्ष्य निर्धारित कर दिया जाए तो दिव्यांगता भी उसके आड़े नहीं आती है । श्री रमेश आज अनेक दिव्यांगो के लिए प्रेरणास्रोत है । दिव्यांग सेतु का श्री रमेश घोलप आईएएस को सादर अभिनंदन

Source - Face Book

महान संकल्प के प्रणेता
श्री अहिरवार

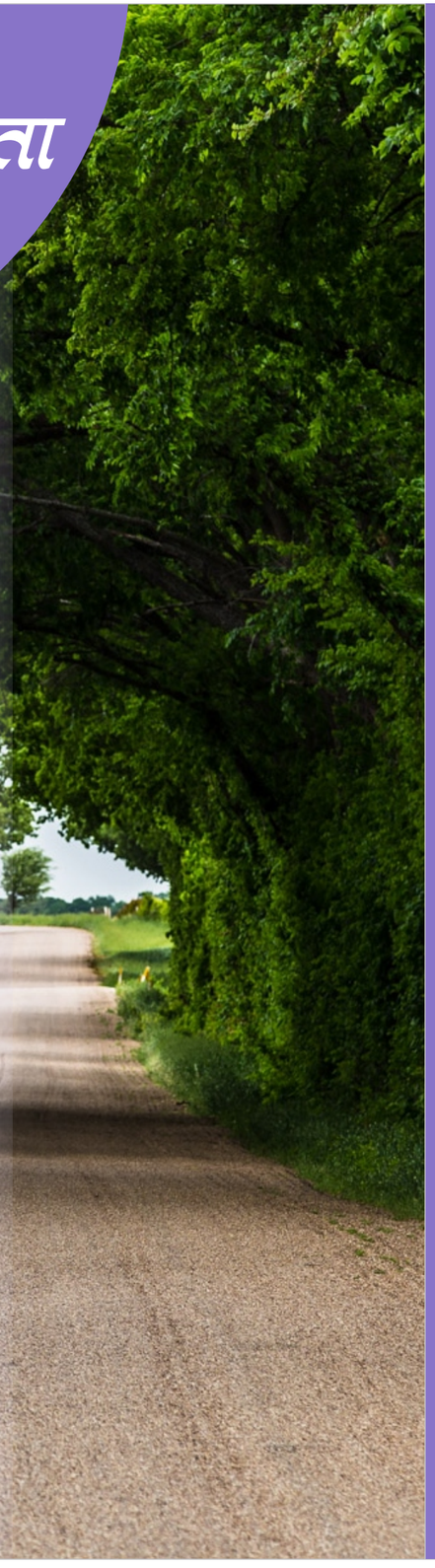

आज हमारे देश में जिस तरह जंगलों की अंधाधुंध कटाई हो रही है, हरे-भरे वृक्षों के स्थान पर कांक्रीट के जंगल खड़े किए जा रहे हैं, क्या यह एक गंभीर चिंता एवं चिंतन का विषय नहीं है ? और अब तो शायद चिंता या चिंतन से भी काम नहीं चलेगा, वृक्षारोपण को एक महायज्ञ मानकर उसमें आहुति डालने स्वरूप कम से कम एक एक वृक्ष लगाने का संकल्प तो हम सबको लेना ही होगा ।

ऐसे ही महान संकल्प से जुड़े हैं, मध्यप्रदेश के ग्राम ईशरपुर के एक दिव्यांग भाई जी अहिरवार । मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के ग्राम ईशरपुर में नर्मदा-पलकमति संगम की ओर से गाँव के मुख्य मार्ग से एक रास्ता बनाया जा रहा है, जिसके दोनों ओर कम से कम पाँच हजार वनस्पति के पौधे रोपने का संकल्प अहिरवारजी ने लिया है । अहिरवार ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति, ग्राम ईशरपुर के अध्यक्ष भी है । इस कार्य मे उन्होंनें साथियों एवं ग्रामीणों से भी सहयोग करने की अपील की है ।

आहिरवार ने मुख्य रूप से अर्जुन, बरगद, जामुन, बेर रीठा, इमली आदि के बीज बोये हैं । तथा नर्मदा परिक्रमा के लिए आने वाले भक्तों से भी वो अपील करते है कि वे भी उनसे बीज लेकर बोया करें । आहिरवार के अनुसार सड़क के ढलान वाले हिस्से पर उन्होंने बीज बोये हैं ताकि आगामी बरसात में बीज ढलान वाले क्षेत्र में पौधे बनें, कालांतर में पेड़ बने तथा सड़क के कटाव को रोकने के साथ-साथ नर्मदा परिक्रमा पथ के दोनों ओर हरियाली ही हरियाली दिखाई दे । इस पुण्य कार्य में ग्राम के आश्रम संचालक स्वामी ईशानानन्द सरस्वती जी ने भी सहयोग दिया । ■

Source - Social Media

बधिर क्रिकेट अकादमी के स्थापक
श्री इमरान शेख

बड़ौदा, गुजरात के इमरान शेख ने सन् २००५ में भारतीय बधिर क्रिकेट टीम द्वारा विश्व कप जीते जाने में एक निर्णायक भूमिका निभाई थी । भारतीय बधिर क्रिकेट टीम में अपना स्थान बनाने के लिए इमरान शेख को बहुत संघर्ष करना पड़ा था और इस वर्ष के पूर्वार्ध में उनकी कप्तानी में भारतीय बधिर टीम ने अपना पहला एशिया कप जीतकर एक नया इतिहास रचा । अपने प्रशिक्षण काल में भोगे गए संघर्षों का ही परिणाम है कि आज इमरान ने बड़ौदा स्थित इरा इंटरनेशनल स्कूल के सहयोग से अपनी खुद की क्रिकेट एकेडमी की शुरूआत की है । अभी हाल ही में इस एकेडमी का शुभारंभ इमरान की सात वर्षीया बेटी रशिका द्वारा किया गया और उस वक्त इमरान के चेहरे पर जो खुशी थी वो अमूल्य थी ।

इस एकेडमी की शुरूआत के बारे में इमरान जो कि मूक-बधिर है, ने इशारो मे बताया कि जब मैं छोटा था तो बहुत से सामान्य बच्चे मेरे साथ मेरी दिव्यांगता की वजह से खेलना पसंद नहीं करते थे और इस बात का मुझे बहुत ही दुःख होता था । मेरे प्रशिक्षण काल के दौरान मुझे सिखाने के लिए अतिरिक्त प्रयासों की जरूरत थी पर सब ऐसा करने के इच्छुक नहीं थे । जब मैंने भारतीय बधिर टीम के लिए खेलना शुरू किया तो मुझे लगा कि अब मुझे कुछ ऐसा करना है कि दूसरे बधिर क्रिकेट खिलाडियों को मेरी तरह मुश्किलों का सामना ना करना पड़े । उनमें भी बहुत योग्यता रहती है, बस उन्हे सही तरह से सिखाने की जरूरत है । उनके इस स्वप्न को साकार करने में स्कूल के मैनेजिंग डायरेक्टर तुषार पटेल एवं शीना मोहनजी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा, जिन्होंने इमरान के सपनों पर विश्वास रखते हुए अपने स्कूल के मैदान में उन्हें एकेडमी खोलने की इजाजत दी ।

शनिवार १७ जून २०१७ को फेडरेशन ऑफ गुजरात इन्डस्ट्रीज (FGI) द्वारा इमरान का सम्मान किया गया ।

इमरान एवं उनकी पत्नी अपना खर्चा चलाने के लिए बडौदा के सयाजीगंज इलाके मे सड़क के किनारे एक स्टॉल पर उबले, अंकुरित मूंग-चने एवं सलाद बेचते हैं । इमरान के इस जज्बे को सलाम है, जिन्होंने आर्थिक तंगी होने के बावजूद भी हार नहीं मानी और अपने लिए एक चुनौती भरी राह चुनी जिसे एक सामान्य व्यक्ति भी नहीं चुनना चाहता ■

Source - The Times of India

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय

दिव्यांग सशक्तिकरण विभाग

भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के अंतर्गत आते दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण हेतु राष्ट्रीय पुरस्कार, २०१७ के लिए निम्न श्रेणियों के लिए अर्जियां आमंत्रित की जा रही है।

(१) सर्वोत्तम दिव्यांग कर्मचारी / स्वरोजगारमय

(२) सर्वोत्तम नियोक्ता तथा प्लेसमेन्ट अधिकारी अथवा एजेन्सी

(३) दिव्यांग व्यक्तियों के लिए कार्यरत सर्वोत्तम व्यक्ति तथा संस्था

(४) रोल मॉडल

(५) दिव्यांगजनों के जीवन में सुधार लाने वाला सर्वोत्तम अनुप्रयुक्त अनुसंधान / नवप्रवर्तन / उत्पाद विकास

(६) दिव्यांगजनों के लिए सुविधाजनक वातावरण सर्जन में उत्कृष्ट कार्य

(७) पुनर्वास सेवाएँ देने मे सर्वोत्तम जिला

(८) राष्ट्रीय दिव्यांग वित्त एवं विकास निगम की सर्वोत्तम विश्लेषण एजेन्सी

(९) उत्कृष्ट सर्जनशील व्यस्क दिव्यांग व्यक्ति

(१०) सर्वोत्तम सर्जनशील दिव्यांग बालक

(११) सर्वोत्तम ब्रेईल प्रेस

(१२) सर्वोत्तम सुगम्य वेबसाईट

(१३) दिव्यांगजनो के सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करने में सर्वोत्तम राज्य

(१४) सर्वोत्तम दिव्यांग खिलाड़ी

ऊपर के पुरस्कारों की प्रत्येक श्रेणी के लिए निर्धारित मापदंड, पुरस्कारों की अनुशंसा करने वाले निर्धारित सत्तामंडल तथा राष्ट्रीय पुरस्कार योजना का पूरा वर्णन मंत्रालय की वेबसाईट (www.disabilityaffairs.gov.in) पर देखा जा सकता है।

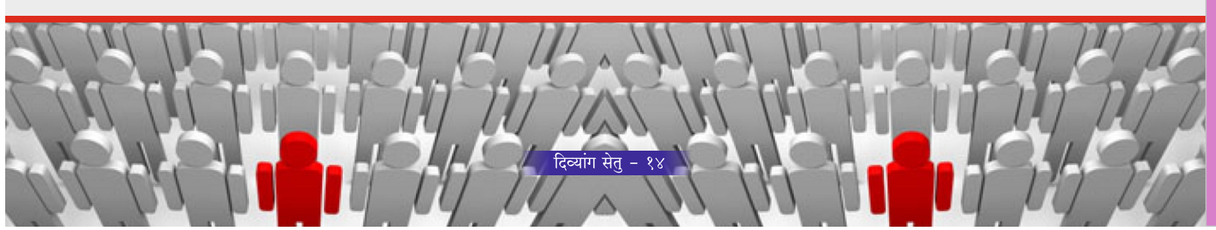

अर्जियाँ सिर्फ हिन्दी अथवा अंग्रेजी में होनी चाहिए। निर्धारित प्रपत्र में अर्जी के साथ निम्नलिखित दस्तावेज संलग्न होना चाहिए :

* दो पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ (व्यक्तियों के मामले में)
* बायोडेटा एवं उसके समर्थन में संक्षेप प्रमाण एवं दस्तावेज और - प्रशस्ति प्रारूप (एक पेज से ज्यादा नहीं)

निर्धारित प्रारूप में प्रस्तुत की गई एवं सभी प्रकार से संपूर्ण रूप से भरी हुई अर्जियाँ श्री ओ.पी. डोगरा, निर्देशक, दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, रूम नं. ५१९, खंड-बी-११ ५ वीं मंजिल, पंडित दीनदाल अंत्योदय भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली - ११०००३ पर १५ अगस्त, २०१७ तक भेज दे। आखिरी तारीख के पश्चात मिलने वाली अर्जियों एवं अथवा निर्धारित अधिकारी / व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत नहीं की जाने वाली अर्जियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

Source - http://disabilityaffairs.gov.in

'दिव्यांग सेतु' पत्रिका में अपना विज्ञापन देकर आप भी दिव्यांगों की मदद के पुनीत कार्य में सहभागी बन सकते हैं।

विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं

Title - 2 ₹ 10,000/-
Title - 3 ₹ 10,000/-
Title - 4 ₹ 10,000/-
आधा पेज - ₹ 5,000/-

विज्ञापन से प्राप्त समस्त राशि दिव्यांग कल्याणकारी योजनाओं में खर्च की जाएँगी।